बनो निराकारी आत्मा

Source: www.brahma-kumaris.com (Main Website) | www.bkgoogle.com (BK Google)

- **बनो निराकारी आत्मा**

आकर्षण मूरत वो है, जो रहता सदा निराकारी
उसको कभी नहीं लुभाती, यह दुनिया विकारी

जो खुद को सदा रखता, अपने श्रेष्ठ स्वमान में
अचल अडोल सदा रहता, निंदा या अपमान में

अपनी कर्मेन्द्रियों को, श्रीमत पर वो चलाता है
अपना तन मन धन, ईश्वरीय सेवा में लगाता है

श्रेष्ठ कर्म की कलम से, अपना भाग्य बनाता है
अपनी मन बगिया में वो, गुण पुष्प ही उगाता है

ब्रह्मा बाप समान जो, अपने संस्कार बदलता है
उसकी चाल चलन से, ईश्वरीय नूर झलकता है

प्यार करता सबसे लेकिन, रहता है सबसे न्यारा
जिसके लिए सब कहते, ये तो बाबा जैसा प्यारा

आओ सब मिलकर अपनी, ऐसी अवस्था बनाएं
बाप समान हम भी, निराकारी आत्मा बन जाएं

ॐ शांति।

by: BK Mukesh bhai - bkmukesh1973@gmail.com

For More **Poems**, visit – www.bkofficial.com/poems

OR scan this QR code with your phone camera ->